Seventeenth Loksabha

an>

Title: Observation regarding uploading the Dignity of Chair and maintaining decorum of the House.

माननीय अध्यक्ष: माननीय सदस्यगण, मैं एक विषय आपके ध्यान में लाना चाहता हूं कि सदन के अंदर और सदन के बाहर अध्यक्ष पीठ पर की जाने वाली टिप्पणी इस सदन की मर्यादा के लिए उचित नहीं है । इस सदन की मर्यादा उच्च कोटि की है, जिसका सभी माननीय सदस्य सम्मान करते हैं । आसन का प्रयास रहता है कि सदन का जो भी सभापति रहे, वह निष्पक्ष रहे, वह निष्पक्षता से काम करता है, सदन को नियम-प्रक्रियाओं से संचालित करता है । अध्यक्ष पीठ पर बैठने वाला माननीय सदस्य या माननीय सदस्या को अध्यक्ष के रूप में निहित सारे संवैधानिक अधिकार प्राप्त होते हैं ।

मेरा आग्रह है कि आसन के बारे में किसी प्रकार की टिप्पणी न सदन के अंदर करनी चाहिए न सदन के बाहर करनी चाहिए, न माननीय सदस्यों को करनी चाहिए, न किसी अन्य व्यक्ति को सामान्य रूप से कभी भी सदन के बारे में या सदन के आसन के बारे में टिप्पणी न करना ही उचित रहेगा । यही हमारे संसदीय लोकतंत्र की मर्यादा है ।

मुझे आशा है कि आप सभी इस पर सहमत होंगे । मैंने पिछले दिनों घटी घटनाओं पर विशेष रूप से संज्ञान लिया है, इसे गंभीरता से लिया है । मैं माननीय सदस्यों से विशेष रूप से आग्रह करना चाहता हूं कि कम से कम सदन के बाहर आसन पीठ पर सोशल मीडिया और मीडिया में टिप्पणी करना उचित नहीं है । आप सदन के सदस्य हैं, कभी आसन से आपकी कुछ तकरार हो सकती है, कुछ बातें हो सकती हैं, आप मुझे चेम्बर में आकर बता सकते हैं । वहां मैं आपकी बात सुनूंगा, यह चेम्बर भी आसन पीठ का ही एक हिस्सा है । मैं सभी माननीय सदस्यों का हमेशा सम्मान करता हूं, हमेशा मेरी कोशिश रहती है कि उनको पर्याप्त समय और अवसर मिले ।

कभी मुझे लगता है कि किसी दल के नेता को आपत्ति होती है कि उन्हें समय कम मिलता है । यह सदन सबका है । मैं आबंटित समय से ज्यादा समय देता हूं और प्रयास करता हूं कि सबको बोलने का पर्याप्त अवसर मिले।

मैं आपको इसलिए भी धन्यवाद देता हूं कि आप देर रात तक ठिठुरती ठंड में संवैधानिक दायित्वों को निभाते हुए सदन में बैठते हैं । अगर आप उचित समझते हैं तो हमें एक मर्यादा बनानी चाहिए और उसका पालन करना चाहिए ।

मुझे एक माननीय सदस्य ने लिखकर दिया है कि जब माननीय सदस्य बोलते हैं तो कोई माननीय सदस्य उनके सामने से गुजर जाते हैं और यह वीडियो क्लिपिंग में आ जाता है । हमारी प्रक्रिया में कुछ चीजें आपने, हमने और सबने तय की हैं ताकि सदन की मर्यादा बनी रहे । हमारे पूर्व अध्यक्षों और पूर्व माननीय सदस्यों ने इस आसन की गंभीरता और मर्यादा को बढ़ाने के लिए बहुत काम किया है, इसलिए हम विश्व में कह सकते हैं कि भारत सबसे बड़ा लोकतंत्र है ।

कोई भी माननीय सदस्य हो, जब भी कोई घटना या बात होती है, तो मैं व्यक्तिगत रूप से बात करता हूं । माननीय सदस्यों की मर्यादा बनी रहे, प्रतिष्ठा बनी रहे, मैं इसकी हमेशा कोशिश करता हूं ।

मुझे आशा है कि आप सब इस विषय पर गंभीरता से चिंतन करेंगे । क्या सदन सहमत है? यह उचित है या नहीं, आप क्या मानते हैं? आप बताएं ।

श्री अधीर रंजन चौधरी (बहरामपुर): माननीय अध्यक्ष जी, आपके साथ हम सबके बहुत अच्छे ताल्लुकात हैं । आपका हम सब सम्मान करते हैं । हमारी जो भी मांग या चाहत होती है, हम बिल्कुल खुलकर आपके सामने पेश करने में सक्षम होते हैं । हम आपके साथ बराबर सहयोग करेंगे ।

SHRI SUDIP BANDYOPADHYAY (KOLKATA UTTAR): Sir, I fully share your sentiment wholeheartedly. We are certainly of the opinion that the prestige of the House should always be kept at a level. We should all remain committed to the principles, ideas and philosophy of this House. The sanctum sanctorum of this House is something else than the other issues. This constitutional place is the chair of the hon. Speaker in the system of conducting the House. We should all remain committed to see that it is well established and can show a path to the whole of the world.

श्री अरविंद सावंत (मुम्बई दक्षिण): आदरणीय अध्यक्ष जी, मैं आपकी व्यथा सुनकर थोड़ा सा हिल गया हूं । हम विधायक थे, हमने देखा है हम सदन में अपनी सीट पर बैठने से पहले आपके आसन को नमस्कार करके बैठते हैं । यह परंपरा है, प्रथा है । हम विधान परिषद् और विधान सभा में भी नमस्ते करके बैठते हैं । अगर उठते हैं तो भी नमस्ते करके बाहर जाते हैं । इस तरह से सदन में आते और जाते समय करते थे । यह संस्कार महाराष्ट्र में आज भी है ।

हां, ऐसा होता है कि हर चीज हमारे मन की नहीं हो सकती है । वहां बैठने के बाद कुछ चीजें पता चलती हैं जैसे समय की पाबंदी होती है, कभी बोलना पड़ता है और कभी चुप भी रहना पड़ता है । चेयर के लिए आदर की भावना है, इसे हम न्यायालय की नज़र से देखते हैं । वहां बैठने वाले व्यक्ति को, उस आसन को आदर की भावना से देखना बहुत महत्वपूर्ण है ।

मुझे लगता है कि आगे चलकर कहीं ऐसा हादसा हुआ है तो गलत है, जिस कारण आपको ठेस पहुंची और आपको सूचित करना पड़ा । मैं खुद भी देखता हूं कि बहुत से माननीय सदस्य आते -जाते रहते हैं । जैसे कोई बात कर रहा है, अगर मैं बीच में से जाता हूं तो कैमरे में मेरा ही सिर आता है । मुझे सोचना चाहिए कि दूसरी जगह से जाएं या किसी को क्रॉस न करें । मुझे लगता है कि यह ठीक नहीं है । आजकल क्लिपिंग देते हैं तो बीच में जाने वाले का सिर आ जाता है, जो कि ठीक नहीं लगता है ।

आपने आज जो व्यथा और चिंता जताई है, मैं सोचता हूं व्यथा नहीं चिंता जताई है । हम सबको देखना चाहिए कि गरिमा बनी रहे । जब हम अपने सदन की गरिमा रखेंगे, चेयर की गरिमा रखेंगे, उसका आदर करेंगे तो ही लोग हमारा आदर करेंगे । अगर हम आपका आदर नहीं करेंगे तो हमारा आदर कौन करने वाला है?

मैं आपकी चिंता से सहमत हूं । आगे चलकर सभी लोग नियमों का पालन करें, मैं ऐसी अपेक्षा करता हूं ।

SHRI A. RAJA (NILGIRIS): Mr. Speaker, Sir, I fully endorse the concerns expressed by the Chair. We have high regards for the Chair. The office of the Speaker in our country has been placed in an exalted position. Any inconvenience caused to the Chair by hon. Members is not at all acceptable. As you put it, if at all we have any difference, it can be settled; your heart is always open; you invite us for negotiations; we often come to your chamber and issues are being settled. We feel sorry if any Member has passed any comments on the Chair. On behalf of our party, we assure that we would cooperate with you to uphold the dignity of the House.

डॉ. फारूख अब्दुल्ला (श्रीनगर): स्पीकर साहब, इसमें कोई शक नहीं है कि आप इस हाउस की इज्जत हैं और उस इज्जत को बरकरार रखना हम सभी मेम्बर्स की जिम्मेवारी है । You are the Master of the House and I

want to repeat something which a Speaker of the British Parliament, which is the mother of democracy said. When the Prime Minister rose up and spoke some things, he said directly to the Prime Minister, 'I am the Master; while I am the Speaker, I am the Master of the House'.

Sir, you are the Master of the House. We look to you as the Father of this House and we assure you, Sir, we will always respect you, we will always respect the Chair. अगर, कोई भी गलती हमसे हो गई है, तो उसको माफ कीजिएगा । हम उम्मीद करते हैं कि आगे भी हम आपकी और इस कुर्सी की इज्जत करते रहेंगे । क्योंकि, हम लोगों की तभी इज्जत है, जब आपकी इज्जत है । इसलिए, मैं अपनी तरफ से और अपनी जमात की तरफ से आपसे यह कहना चाहता हूं कि हम हर समय आपकी और इस कुर्सी की इज्जत रखेंगे । बहुत-बहुत शुक्रिया ।

श्री रितेश पाण्डेय (**अम्बेडकर नगर**): माननीय अध्यक्ष जी, आसन की गरिमा और पीठ की मर्यादाओं को हमेशा ध्यान में रखते हुए बहुजन समाज पार्टी और बहन कुमारी मायावती जी ने हमारे सभी सदस्यों को हमेशा निर्देशित किया है कि कहीं से भी पीठ और आसन के ऊपर कोई भी ऐसी टिप्पणी या ऐसा बर्ताव न हो, जिससे आसन के मान-सम्मान में कोई कमी आए । हमारा निरन्तर यही प्रयास रहता है । चाहे कभी वेल में जाने की बात हो या सदन की जितनी भी मर्यादाएं हैं, जितने भी रूल्स हैं, उनको पालन करने की बात हो, तो बहुजन समाज पार्टी निरन्तर उन सभी आदेशों का पालन करती रही है, जो हमें पीठ से दिया जाता है । आपको जो ठेस पहुंची है, उससे पूरे सदन को पीड़ा है । मुझे पूरा विश्वास है कि जो कुछ भी कल इस परिसर में हुआ, जिससे आपको ठेस पहुंची है, वह आइंदा यहां कभी नहीं दोहराया जाएगा । मैं आपको अपनी पार्टी की तरफ से यह पूर्ण विश्वास दिलाता हूं कि पूर्व की तरह हम लोग निरंतर इस सदन की और आसन की गरिमा को बनाए रखेंगे । बहुत-बहुत धन्यवाद ।

श्री नामा नागेश्वर राव (खम्माम): अध्यक्ष महोदय, आपने जो बातें सीधे हाउस के सामने रखी हैं, उनका पूरा पालन करते हुए कहना चाहता हूं कि आपने सत्रहवीं लोक सभा में सबको एकोमोडेट करके अपने बच्चे जैसा रखा है । अभी सीनियर माननीय सदस्य ने बताया है कि आप टीचर हैं तो हम लोग स्टूडेंट्स हैं, आप फादर हैं तो हम लोग सन हैं । इस चेयर को हम लोगों को रेस्पेक्ट देना चाहिए । अभी तक दिया है और आने वाले समय में भी देंगे । कल जो कुछ भी हुआ, उसको हम लोगों ने भी ऑब्जर्व किया था । जो कुछ अन्दर हुआ, इनसाइड में हम लोगों ने एवं कुछ अन्य मेम्बर्स ने जानने की कोशिश की । बाहर के बारे में हमें पता है । आगे इस तरह से नहीं होना चाहिए । हम लोगों को अपनी वैल्यू कम नहीं करनी चाहिए । देश की 130 करोड़ जनता ने चुनकर हाउस में 543 मेम्बर्स को भेजा है । हरेक मेम्बर्स को 15 से 20 लाख लोगों ने अपना वोट देकर इधर भेजा है । इधर हम लोग कुछ भी इस तरह से करेंगे तो देश में भी उसकी एक्सेप्टिबिलिटी नहीं है । जो कुछ भी हुआ, आगे से हम लोग आपकी बात को ध्यान में रखते हुए आपके साथ खड़े रहेंगे । धन्यवाद ।

SHRIMATI SUPRIYA SADANAND SULE (BARAMATI): Sir, today, we stand here with a lot of pain and distress about what happened yesterday in Parliament. It is a very unfortunate incident. I think, rules are made to be followed, and the rules are equal for every Member here. It is a tradition. I myself have been a Member for over a decade, and we have, fortunately not seen such kinds of extreme behaviour earlier.

I, on behalf of all of our colleagues, would say that we are really saddened about what happened yesterday. We commit to a good behaviour. We are the role models. When people look up to us as MPs, we represent over 20 lakh people, as a voice of 20 lakh people. So, what had happened is very unfortunate. I think, we all need to introspect; and all of us in all our party meetings, shall discuss this

issue and make sure that no such unruly behaviour ever happens from any of us towards any Member, towards each other, of course, not the Chair.

Thank you.

SHRI BHARTRUHARI MAHTAB (CUTTACK): Sir, I stand here with full anguish. I was a witness to a number of incidents and also that of yesterday. Unfortunate incidents do happen, and responsible Members of this House and responsible political parties of this House do express their anguish. But the manner in which you have stated it before us today, is something, which has forced us to ponder.

Rules are there; regulations are there; and whenever a Member gets elected to this House, the first day when he registers himself by showing his elected paper which he gets from the District Magistrate of his District, is provided with all the books, rules and regulations about what is to be followed. Subsequently, he is also taught. About two days' time is given where etiquettes are also told to him. But the best thing is, we observe others inside the House how the Members behave; and it is by observation that we learn many things. Very few Members actually read the rules and regulations. But it is only by observation that we conduct ourselves, and we always try to behave in a proper manner so that it becomes an example for others outside the House.

But the manner in which -- with the new technology like social media that is there -- in our anxiety to express ourselves, our anger, at times put us in difficulty; and that has happened yesterday.

I have marked many a time that not only some Members cross the floor but they also turn their back to the Chair and also gossip when some hon. Member is speaking in his turn inside the House. Is it necessary that one has to go and tell him or her that this is not the way to behave inside the House? These are certain etiquettes that we learn from how others are behaving. But that is not happening here.

Therefore, it was a very sad day yesterday. But it is good that most of us are opening up our mind here, and I believe that this will be a lesson for everyone including me to understand why that has happened the other day, and we have to correct ourselves.

Thank you, Sir.

SHRI JAYADEV GALLA (GUNTUR): Sir, I would like to echo the sentiments and the feelings that all of my colleagues have expressed today.

On behalf of the Telugu Desam Party, hearing you speak today, we are very sorry that you had to feel that way and express yourself in this manner.

I assure you that from our party's side, we will maintain our composure and we will follow all the rules, and give the utmost respect to you, Sir.

Earlier, in the previous term, Shrimati Sumitra Mahajan was the mother of this House; and as Mr. Farooq Abdullah rightly mentioned, you are the father of the House. We will provide all that

respect to you, Sir.

Thank you.

SHRI N. K. PREMACHANDRAN (KOLLAM): Sir, I also, on behalf of my party and on my own behalf, fully endorse the views expressed by the hon. Speaker.

Sir, I am also a witness to yesterday's proceedings. I would like to appreciate the magnanimity which you have shown. The way in which you have presented the matter before the House even without mentioning the name, we have to appreciate you for that. We were all present yesterday. It is quite unfortunate. We all know that we all are being governed by the rules and regulations. It is not only the rules, regulations and directions but also the conventions and precedents of this House, from the days of Mavalankar and all these seven decades of our experience, that has built-up this House, the decorum and etiquettes of the House. The seriousness of this House is because of the precedents and conventions. Questioning the authority of the Chair can never be allowed. It is quite unfair. We may be having differences of opinion on the allocation of time. It is not an easy task. By having 543 number of Members present in this House, such a big House, with so many political parties and so many diversities, conducting the proceedings from the Chair is not an easy task. I can very well say this with my limited experience. Definitely, when conducting such a proceeding, we have to cooperate with the Chair. Whatever happened yesterday was quite unfortunate. The entire House is endorsing the views and the anguish expressed by the hon. Speaker. Definitely, we will try our level best to conduct the proceedings in the best way possible so as to maintain the decorum of this House.

Thank you very much, Sir.

कृषि और किसान कल्याण मंत्री (श्री नरेन्द्र सिंह तोमर): माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं इस सत्र में पहली बार आपको इतना व्यथित देख रहा हूँ । निश्चित रूप से आपकी वेदना का पूरा असर पूरे सदन पर है । सभी दल के नेताओं ने अपने-अपने विचार व्यक्त किए हैं और मुझे लगता है कि सभी आपकी भावनाओं के साथ हैं । भारत बड़ा लोकतंत्र हैं और संसद लोकतंत्र का सबसे बड़ा मंदिर है । लोक सभा की कार्यवाही संचालन में आसन्दी का महत्व है । सदन के लिए नियम-प्रकिया है । उनके अंतर्गत ही आसन्दी काम करती है और आसन्दी की हमेशा कोशिश रहती है कि वह निर्लिप्त रहे, निष्पक्ष रहे और उसी भूमिका से सभापति तालिका के जो सदस्य हैं, वे भी अपनी भूमिका का निर्वहन करते हैं ।

माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं ही नहीं, बल्कि पूरा सदन इस बात के लिए आपकी हमेशा प्रशंसा करता है कि चाहे दल हो, चाहे दल के नेता हों, चाहे सामान्य सांसद हों, चाहे प्रश्न काल हो, चाहे शून्य काल हो या चाहे किसी बिल पर डिस्कशन हो, आपकी हमेशा यह कोशिश रहती है कि अधिक से अधिक प्रतिनिधि बोलें, अपनी बात रखें, अपने क्षेत्र के विषय उठाएं और यह बात सभी पार्टियों के सांसद सेन्ट्रल हॉल में बोलते हुए दिखाई भी देते हैं । कल जो

कुछ हुआ, वह निश्चित रूप से बहुत ही दुर्भाग्यपूर्ण था । वह किसी को भी अच्छा नहीं लगा और उसके कारण आपके भी मन में वेदना है । मैं आपको आग्रह करना चाहूंगा कि सभी सदस्यों को आपकी भावना का ख्याल रखना चाहिए । संसद के भीतर भी और संसद के बाहर भी निश्चित रूप से जो हमारी लोकतांत्रिक मर्यादाएं हैं, उनका पालन होना चाहिए । मैं अपनी ओर से तथा अपने दल के सदस्यों की ओर से आपको भरोसा दिलाना चाहता हूँ कि हम सब आसन्दी के सम्मान के लिए जो आवश्यक होगा, उसे जरूर करेंगे ।